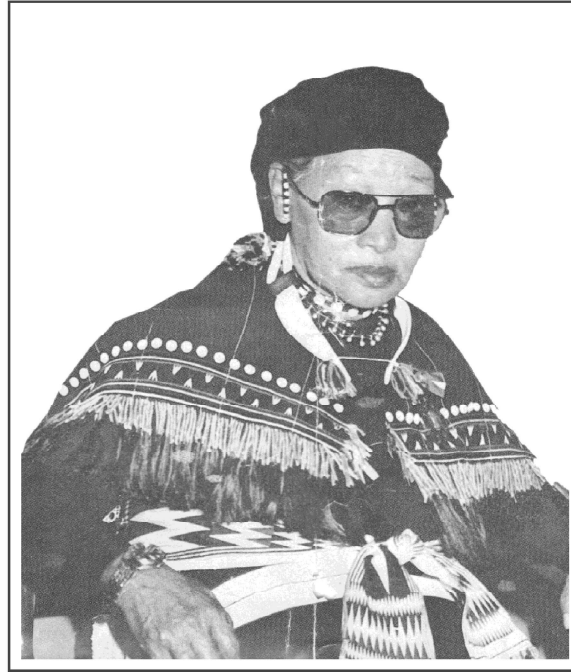




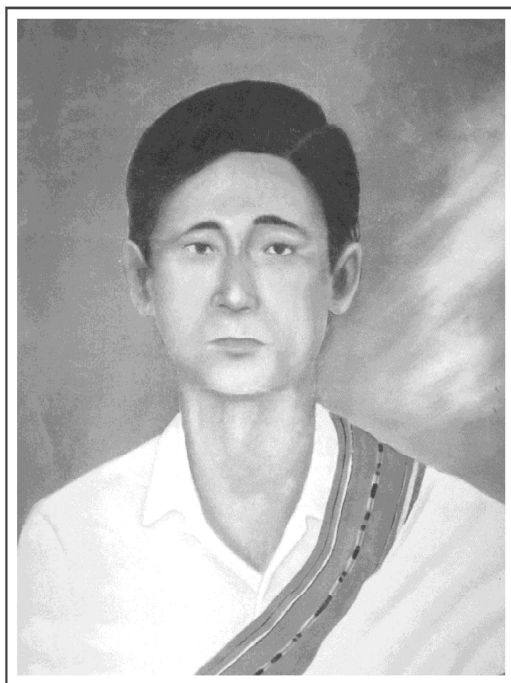
पाठ – छह

रानी गाइडिन्ल्यू



इतिहास साक्षी है कि मणिपुर के पर्वतीय क्षेत्र में एक वीरांगना ने नव जन्म लिया था। उन्होंने अंग्रेजों को मणिपुर से भगाने का भरसक काम किया था। इस स्वतंत्रता g 4n4r H\$mZm_ h;Jn6SZe` 8CZH\$mOY_ 26 जनवरी, 1915 को तमेइलोइ जिले के नुइखाओ नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम लोत्तोहानाइ था। वे अपने माँ-बाप की तीसरी औलाद थीं। वे एक साहसिक नारी थीं। बचपन में भी उनके द्वारा किए वीरतापूर्ण कार्यों को देखकर लोग बहुत प्रभावित हुए थे। तेरह वर्ष की आयु में ही वे

जादोनड की अनुयायी हो गई थीं। जादोनड गाइडिनल्यू के चचेरे भाई थे। जादोनड बचपन से ही काङ्बिरोन में रहते थे। इसलिए उन दोनों की मुलाकात नहीं हुई थी। जादोनड ने अंग्रेजों को अपनी आँख का काँटा समझा था। वे अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना चाहते थे। इसलिए जादोनड गुप्तावस्था में कुछ पर्वतीय महिलाओं को प्रशिक्षण दे रहे थे। गाइडिनल्यू जादोनड से मिलने के लिए काङ्बिरोन गई थीं। जादोनड ने गाइडिनल्यू को अच्छी तरह से पहचान लिया। गाइडिनल्यू ने भी उस प्रशिक्षण में भाग लिया। जादोनड ने उनके हाथ बहुत काम सौंपे। स्वतंत्रता आन्दोलन का मुख्य कार्य भी जादोनड ने गाइडिनल्यू को सौंपा।



जादोनड ने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध गुप्त काम किया। अंग्रेज सरकार को इसका पता चल गया। अंग्रेज सरकार ने उसे बेगारी करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने क्रोधित होकर अंग्रेज सरकार के एक अधिकारी को जान से मार डाला। अंग्रेज सरकार ने जादोनड को पकड़ा और फाँसी पर लटका दिया।

जादोनड के बलिदान के बाद गाइडिनल्यू ने उसका काम सम्भाला और अंग्रेजों के खिलाफ अथक आन्दोलन करने की शपथ ली। उन्होंने नागा जाति के लोगों को इकट्ठा किया और जादोनड के चले रास्ते पर चलने लगी। जादोनड के सिद्धान्त के पीछे चलकर उन्होंने उनकी इच्छा पूरी करने की कोशिश की। उन्होंने गुप्त रूप में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन किया और कहा – “ हम किसी के अधीन नहीं हैं। अंग्रेज हम पर शासन नहीं कर सकते।” उत्तर कछार, मणिपुर के पश्चिमी जिले और नागालैण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हो गया। वे उस विद्रोह की अग्रणी थीं। अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करने का जाल फैलाया। उन्हें पकड़ सकनेवाले पर पाँच सौ रुपए का इनाम भी घोषित किया गया। वे गुप्त रूप में गाँव-गाँव घूम कर विद्रोह का प्रचार करती रही और अंग्रेज सरकार उन्हें पकड़ नहीं पाई।

गाइडिनल्यू ने हडगुम में एक किला बनवाकर उसमें चुपचाप काम किया। अंग्रेज सरकार को उसका गुप्त समाचार मिल गया। अंग्रेजों ने वहाँ पर आक्रमण किया। उनको पकड़ने के लिए असम राइफलस के जवानों को काम में लाया गया। जवानों ने बहुत अत्याचार और अन्याय किए। नागा जनजाति के लोगों को जीवित जलाया गया। अन्य कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। किशोरियों और स्त्रियों को अपमानित किया गया। अंग्रेजों ने कई महीने तक दमन नीति चलाई।

17 अक्टूबर, 1932 के दिन नागालैण्ड के एक गाँव से उन्हें पकड़ लिया गया। उनपर कई आरोप लगाए गये। सन् 1935 में अंग्रेज सरकार ने गाइडिनल्यू को मौत की सजा सुनाई। उन्होंने इंग्लैण्ड की महारानी से अपील की। फलतः उनकी मौत की सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई।

सन् 1937 में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने शिलांग जेल में गाइडिनल्यू से भेंट की। उनकी अवस्था देखकर नेहरू को बड़ा दुख हुआ। इसलिए उन्हें मुक्त कराने के लिए अंग्रेज सरकार से निवेदन किया, परन्तु अंग्रेज सरकार ने उनकी बात नहीं मानी। नेहरू ने उन्हें ‘कबुई

जनजाति की रानी' कहकर सम्बोधित किया। तब से लोग गाइडिन्ल्यू को 'रानी गाइडिन्ल्यू' के नाम से पहचानने लगे। 15 अगस्त, 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली। भारत के आज़ाद होने के तुरन्त बाद भारत सरकार ने रानी गाइडिन्ल्यू को जेल से मुक्त किया और उन्हें आजीवन पेंशन प्रदान किया।

सन् 1956 तक उन्होंने समाज की सेवा की। लेकिन आगे चलकर अपनी इच्छा के अनुकूल उन्होंने भारत सरकार के विरुद्ध काम किया। छह वर्ष तक लगातार संघर्ष करने के पश्चात उन्होंने भारत सरकार के साथ समझौता किया। सन् 1972 में भारत सरकार ने उन्हें स्वतंत्रता-सेनानी घोषित किया और 'ताम्र-पत्र' प्रदान कर सम्मानित किया।

17 फरवरी, 1993 को इस स्वतंत्रता सेनानी का देहान्त हुआ। उनके त्याग और जीवन में हुई संघर्ष की प्रेरणा को हम सब भारतवासी कभी नहीं भूल पाएँगे।

कठिन शब्दों के अर्थ—

भरसक	= जहाँतक संभव हो।
औलाद	= सन्तान, वंशज।
अनुयायी	= अनुचर, अनुसरण करनेवाला।
आँख का काँटा	= कष्ट होना, शत्रु होना, कार्य में बाधा उत्पन्न करना।
बेगारी	= बलात् श्रम, मजदूरी न देकर जबर्दस्त काम कराना।
मज़बूर	= विवश, लाचार, निःसहाय, जिसपर जबर किया गया हो।
जान से मार डालना	= हत्या-करना, मार डालना।
खिलाफ	= विरुद्ध, विपरीत।
अथक	= न थकनेवाला।
शपथ	= कसम, सौगंध।

अग्रणी	=	अगुआ, आगे चलनेवाला, नेता।
किशोरियों	=	सुन्दर युवतियों।
अपमानित किया	=	तिरस्कृत किया, अपमान किया।
आरोप	=	दोष-संस्थापन।
आजीवन कारावास	=	उम्रभर कैद में रहना।
भेंट	=	मुलाकात, उपहार।
प्रदान किया	=	दे दिया, इनाम / पुरस्कार दिया।
अनुकूल	=	पक्ष में रहनेवाला।
समझौता	=	आपस का करार या निश्चय, निपटारा, निर्णय।

प्रश्न-अभ्यास

1. गाइडिन्ल्यू का जन्म कब और कहाँ हुआ था? उनका बचपन कैसा था और वे जादोनङ् की अनुयायी क्यों हुईं ?
2. जादोनङ् के मरने के बाद गाइडिन्ल्यू के किए कार्यों का चित्रण कीजिए।
3. जादोनङ् कौन थे ? गाइडिन्ल्यू से उनका क्या संबंध था ? अंग्रेजों ने उनको फाँसी पर क्यों लटका दिया ?
4. आजीवन कारावास क्या है ? गाइडिन्ल्यू आजीवन कारावास से कब मुक्त हुईं ?
5. जवाहरलाल नेहरू ने गाइडिन्ल्यू को किस नाम से सम्बोधित किया और आगे चलकर वे किस नाम से जानी जाने लगीं ?

6. 'रानी गाइडिन्ल्यू' पाठ का सारांश लिखिए।
7. मणिपुर का एक मानचित्र खींचकर तमेङ्लोङ् जिला, नुङ्खाओ और काङ्बीरोन निर्धारित कीजिए।
8. अपने गुरुजनों से पूछकर जादोनङ् के बारे में और जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।
9. भारत में अंग्रेजों के राज की जानकारी अपने अध्यापक से पूछकर समझ लीजिए।
